जापान का आधुनिकीकरण

[MODERNIZATION OF JAPAN]

डॉ. के. के. पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर
(छ.ग.)

भूमिका (INTRODUCTION)

उत्तर में कमचटका (Kamchatk) से दक्षिण में फारमोसा (Farmos) तक विस्तृत जापान प्रशान्त महासागर में स्थित अनेक द्वीपों का समूह है। इसे एशिया के पूर्वी किनारे के लगभग एक हजार मील वृत्ताकार द्वीपसमूह का प्रदेश भी कहा जाता है। होकेडो (Hokido), होनसू (Honsu)य सीकोकू (Shikoku) एवं क्यूसू (Kyushu) प्रमुख द्वीप हैं। 85 प्रतिशत पर्वतीय भाग वाले जापान को सुशीमा (Tsusima) नामक एक संकीर्ण खाड़ी कोरिया से विभक्त करती है। उगते हुए सूर्य का देश (Land of Rising Sun) के नाम से विख्यात जापान का सुन्दरतम नगर टोकियो अपने भीतर जापान की लगभग आधी जनसंख्या को समाहित किये है। जापान की भौगोलिक स्थिति ने वहां के इतिहास को भी प्रभावित किया इस बात को नकारा नहीं जा सकता। पुरातन एवं राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हुए देश जापान का 1852 ई. के पश्चात् एकाएक महाशक्ति के रूप में उभरना पूर्व के लिए अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना थी।

645 ई. में जापान में चीन के थांग राज्य के नमूने पर केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था की स्थापना हुई और भूमि का राष्ट्रीयकरण कर प्रान्तों एवं प्रदेशों में सरकारी पदाधिकारियों को नियुक्त किया गया।

मध्य युग में उस समय सामन्ती व्यवस्था का रूप सामने आ गया जब इन सरकारी पदाधिकारियों के यह वंशानुगत हो गये। पारस्परिक वैमनस्य की भावना से इन पदाधिकारियों

ने अपनी शक्ति संवर्धन का प्रयास करते हुए बड़ी–बड़ी जागीरों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। सामन्ती व्यवस्था के रूप में इन पदाधिकारियों को डैम्यो कहा जाने लगा। डैम्यो (सामन्तों) ने शनैः–शनैः अपनी–अपनी सेनाओं का संगठन कर लिया। ये सेनिक 'समुराई' (सेवक) के नाम से जाने जाते थे।

सम्राट ने उसके प्रभाव में आकर उसे 'शोगून' बना दिया। शोगून से तात्पर्य 'सर्वविजयी सेनानी' से है, यह एक उपाधि है जो कि उन वीर सैनिकों को दी जाती थी जो कि युद्ध स्थल में सेनाओं का नेतृत्व किया करते थे।

कालान्तर में यह पद वंशानुगत हो गया। शोगून के अस्तित्व ने सम्राट के अधिकारों को सीमित कर दिया। वास्तविक शक्ति शोगून के हाथों में आ गई। सम्राट शोगून के हाथों की कठपुतली बन गया। सम्पूर्ण प्रशासनिक अधिकार शोगुन के हाथों में केन्द्रित हो गये। जापान के सम्राटों की राजधानी एवं निवासगृह क्योतो (Kioto) था, परन्तु शोगून द्वारा शासन संचालन कामाकुरा (Kamakur) से किया जाने लगा। कालान्तर में शासन संचालन का स्थल कामाकुरा से स्थानान्तरित कर येडो (Yedo) बना।

जापान का आधुनिकीकरण

जापान में विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में मेईजी पुर्नस्थापना तो हो चुकी थी विदेशी हस्तक्षेप से प्रतिरक्षा हेतु जापान का नव–निर्माण अत्यन्त आवश्यक था। प्राचीन परम्पराओं एवं प्राचीन गौरव से चिपटे रहकर जापान को विदेशी साम्राज्यवादियों के शिकंजे से बचाया नहीं जा सकता था। लिए आवश्यक था कि पश्चिमी ज्ञान एवं विज्ञान की आधुनिकतम जानकारी प्राप्त कर जापान का पुर्नगठन राष्ट्र के रूप में किया जाय, जिससे यूरोपीय राष्ट्रों को जापान को अपने समकक्ष प्रतिष्ठित करने में विवश होना पड़े, अतः प्रत्येक क्षेत्र में आधुनिकीकरण के ठोस कदम उठाये गये। इन प्रयत्नों से जो जापान हमें मिला उसे आधुनिक जापान की संज्ञा दी गई। अतः स्वाभाविक रूप से दृष्टि आधुनिकीकरण के उन ठोस

प्रयत्नों की प्रक्रिया की ओर चली जाती है, जिसने जापान का आधुनिकीकरण कर दिया। संक्षेप में इसका विवनण निम्नवत है :

(अ) **सामन्ती व्यवस्था का अन्त** — यह ठीक है कि मेईजी पुर्नस्थापना में सामन्त वर्ग का महत्वपूर्ण था, परन्तु शासन के केन्द्रीकरण के लिए सामन्त वर्ग के अस्तित्व की समाप्ति भी परमावश्यक थी। प्रश्न था कि क्या सदियों से शासन सत्ता के सुख का उपभोग करने वाला सामन्त वर्ग अपने अधिकारों को त्याग देगा? मेईजी की पुर्नस्थापना के समय यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि मेईजी की सत्ता की पुर्नस्थापना से सामन्त वर्ग का अन्त होगा, परन्तु राष्ट्रीयता की भावना एवं शासन की सुदृढ़ता के लिए समुराई वर्ग सामन वर्ग की सत्ता को समाप्त करना चाहता था। इधर सामन्त अब नाममात्र के सामन्त रह गये थे। उनकी शक्ति समुराई वर्ग पर निर्भर हो गई थी। अतः समुराई वर्ग के प्रभाव में आकर उन्होंने अपने अधिकारों के त्याग को स्वीकार कर लिया।

(ब) **शासन तन्त्र में सुधार—** शासन तन्त्र का सुदृढ. करने के लिए प्रशासनिक ढांचे का गठन आवश्यक था। प्रशासनिक ढांचे के स्वरूप के निर्धारण हेतु एक आयोग का गठन कर उसे 1882 ई. में विश्व की विभिन्न शासन व्यवस्थाओं के अध्ययन हेतु विभिन्न स्थानों पर भेजा गया।

(स) **सेना का आधुनिकीकरण** — सामन्ती व्यवस्था की समाप्ति होते ही उस व्यवस्था पर आधारित सैनिक व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक था। अब तक सेना में समुराई वर्ग के लोगों को ही लिया जाता था। इस प्रकार जनसाधारण को सेना में भर्ती होने का अधिकार नहीं था, परन्तु अब जनसाधारण के प्रत्येक वर्ग के लिए सेना के द्वार खोल दिये गये। एक सैनिक विभाग की स्थापना की गई। सामन्तों के सैन्य संगठनों को समाप्त कर दिया गया। 1872 ई. में सेना के संगठन एवं सेवा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। 21 वर्ष की उम्र वाले प्रत्येक स्वस्थ पुरुष के लिए सैनिक सेवा अनिवार्य हो गई। जापान को सैनिक दृष्टि से 6 जिलों में विभक्त कर दिया गया। प्रत्येक जिले में एक सैनिक विभाग की स्थापना की गई। रिकूगन देगाको (Rikugun Daigakko) में सैनिक अधिकारियों को प्रशिक्षण देने हेतु प्रशिक्षण

केन्द्र स्थापित किया गया। फ्रांसीसी, जर्मन एवं अंग्रेज विशेषज्ञों को प्रशिक्षण हेतु बुलाया जाने लगा। 1872 ई. में नौ सेना विभाग का गठन किया गया। 1882 ई. तक नौ सेना के क्षेत्र में जापान ने आश्चर्यजनक विकास कर लिया।

(द) **शिक्षा का पुनर्गठन** – जापान को आधुनिकीकरण के क्षेत्र में विकसित करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान से जापानी जनमानस को परिचित कराना चरित्र निर्माण सम्राट एवं राष्ट्र के प्रति भक्ति एवं निष्ठा का विकास शिक्षा के महत्वपूर्ण मानदण्ड निश्चित किये गये। 1868 ई. की शाही शपथ के निर्देशानुसार प्रत्येक देश से आधुनिकतम ज्ञान प्राप्त किया जाय। 1871 ई. में शिक्षा विभाग का गठन हुआ। कानून बनाकर घोषित किया गया कि प्रत्येक वर्ग के स्त्री एवं पुरुष के लिए शिक्षा अनिवार्य है। इसका मूल उद्देश्य यह है कि समाज में कोई भी परिवार एवं परिवार का कोई भी व्यक्ति अज्ञानी अशिक्षित न रहे।

(य) **पत्रकारिता का विकास** – शिक्षा के क्षेत्र में हुए क्रान्तिकारी परिवर्तनों से पत्रकारिता पर विशेष प्रभाव पड़ा। सबसे पहला जापानी दैनिक समाचार पत्र **'याकोहामा माइचीनी शीम्बून'** 1870 ई. में प्रकाशित हुआ। 1875 ई. तक लगभग 100 समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे। समाचार–पत्र एवं पत्रिकाओं की बाढ़ ने जापानी जनमानस को बौद्धिक एवं शैक्षिक रूप से जागरूक कर दिया।

(र) **धार्मिक जीवन में परिवर्तन** — मेईजी पुर्नस्थापना के पश्चात् राष्ट्रीयता के विकास के दृष्टिकोण से प्राचीन 'शिन्तो धर्म' को लोकप्रिय बनाया गया। शिन्तो धर्म के अनुसार सम्राट के प्रति निष्ठा एवं आस्था सर्वोपरि थी। बौद्ध धर्म के स्थान पर शिन्तो धर्म के प्रसार के लिए इसे राजधर्म भी घोषित किया गया। इससे जापानी जनमानस में एकता की भावना प्रबल हुई।

(ल) **आर्थिक विकास** – जापान के आधुनिकीकरण के लिए जापान का आधुनिक दृष्टि से आर्थिक विकास अति आवश्यक था। अतः जापान में पाश्चात्य औद्योगिक विकास की ही नीति का अनुगमन कर औद्योगिक विकास की ओर ध्यान दिया गया। 1870 में उद्योग मन्त्रालय की स्थापना की गई। 1871 में मशीनों के पुर्जे और सामग्री बनाने का कारखाना, 1875 में सीमेण्ट

का कारखाना एवं 1876 में कांच का कारखाना खोले गये। कपड़ा निर्माण हेतु भी कारखाने खोले गये। 1870 ई. में होन्स में पहली रेशम लपेटने की मशीन गई। टोकियो एवं ओसाका में गोला–बारूद, बन्दूक एवं तोप के कारखाने खोले गये। लोहा, सोना एवं चांदी की खानों का खनन किया गया। 1890 ई. तक जापान के अधिकांश कल–कारखाने भाप की शक्ति से कार्य करने लगे।